244 P
838
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1224
10/71

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 838

20-1

891.431
P89S

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
10 DEC. 1930

'स्वतंत्र भारत' का सिंहनाद

संसार के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष, भारतीय स्वतंत्रता के तपस्वी महारथी

महात्मा मोहनदास करमचंद गांधी (नज़र कैद)

हिंदू-समाज-सुधार कार्यालय,

सआदतगंज रोड, लखनऊ से प्राप्त ।

Series No. 15.

راشٹریہ ڈنکا اور سودیشی کہانی

"آزاد ہندوستان" کے اول جھنڈا لہرانے والے انڈین
نیشنل کانگریس کے پریسیڈنٹ

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 838
Date 22-12-71
GOVT. OF INDIA

فخر قوم پنڈت جواہرلال جی نیہرو

پبلشر—ہندو سماج سدھار کاریالیہ
سعادتگنج روڈ—لکھنؤ

स्वतंत्र भारत का सिंहनाद

अटल हमारा धैर्य देखकर गिरिवर भी टल जावेगा।
हिंसा-हीन हृदय को लखकर, सागर सीस झुकावेगा॥
दमन करो जितना जी चाहे, पीछे पग न हटावेंगे।
अब तो अड़कर बैठ गए, भारत स्वाधीन बनावेंगे॥

संपादक

पं० चंद्रिकाप्रसाद जिज्ञासु

प्रकाशक

श्रीत्रिभुवननाथ 'आज़ाद' सैनिक

देशबंधु स्मारक भंडार (प्रकाशन-विभाग)

चितरंजन रोड, छपरा

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथमावृत्ति] सन् १९३० ई० [मूल्य -)

मुद्रक—महादेवप्रसाद, अर्जुन प्रेस, कबीर चौरा, काशी

पुस्तक मिलने का पता—भीम-पुस्तक-भंडार

तिनकोनिया, छपरा

(2)

छपरा (तिनकोनिया) में एजेंसी खुल गई !!!

हिंदू-समाज-सुधार-माला, लखनऊ की अपूर्व पुस्तकें !

हिंदू-समाज-सुधार-माला की सचित्र पुस्तकों का हिंदू-समाज में इतना अधिक मान क्यों हुआ ? इसका उत्तर यही है कि इनके मनोहर गाने घर-घर में आर्य-हिंदू ललनाएँ और कन्याएँ बड़े प्रेम से गाती हैं। लोग सैकड़ों की संख्या में मँगाकर इन्हें पुत्र-पुत्रियों एवं बहुओं को देते, कन्या-पाठशालाओं में बाँटते तथा ब्याह-शादी आदि उत्सवों में वितरण करते हैं। प्रचारार्थ सौ पुस्तकें ३≈) में दी जाती हैं।——

ईश्वर-विनय	... -)	होली हिंदू-सुधार	... -)
नारी-संगीत-रत्न (प्रथम भाग)	-)	अछूत-पुकार	... -)
नारी-संगीत-रत्न (द्वितीयभाग)	-)	राष्ट्रीय डंका व स्वदेशी खादी	-)
सीता-सती	... -)	,, ,, (उर्दू में)	... -)
सोहागरात के वादे	... -)	'स्वतंत्रभारत' का सिंहनाद	... -)
अनमेल-विवाह	... -)	क्रांति का शंखनाद	... -)
विधवा-विलाप	... -)	भजन कुरीत-निवारण	... -)
कन्या-संगीत-रत्न	... -)	द्विजाति कौन हैं ?	... -)
औंधी खोपड़ी और घोंघाबसंत	-)	सावित्री सत्यवान	... =)
वेश्या-दोष-दर्शन	... -)	नारी-संगीत-रत्न (चारो भाग)	।≈)
जुआ-दोष-दर्शन	... -)	साम्य-तत्त्व (हिंदू-साम्यवाद)	॥≈)
नशा-दोष-दर्शन	... -)	आर्य और वेद (वैदिक सभ्यता)	।॥≈)

आवश्यक सूचना—इनके सिवा नवजीवन पुस्तक-माला तथा अन्य प्रकाशकों की सब प्रकार की राष्ट्रीय पुस्तकें और नेताओं के चित्र भी हमारे कार्यालय में मिलते हैं।

प्रचारकों और एजेंटों की हर जगह ज़रूरत है।

कमीशन बहुत अधिक दिया जाता है। पत्र भेजकर मालूम करें।

पता—(१) संचालक, हिंदू-समाज-सुधार-कार्यालय
सआदतगंज रोड, लखनऊ

(२) संचालक, भीम-पुस्तक-भंडार
तिनकोनिया, छपरा

स्वतंत्र भारत का सिंहनाद

१. "स्वराज होगा"

[श्रीपरमेश्वरीदयालसिंह "सदा"]

भँवर के चक्कर से पार अब यह स्वतंत्रता का जहाज होगा।
वह दिन मुबारक है आनेवाला कि हिंद में जब स्वराज होगा॥
फ़िज़ूल-ख़र्ची मिटेगी सारी, चलेगा चर्ख़ा, बनेगी खादी।
निहाल होंगे स्वदेश-भाई, जब अपना भारत में राज होगा॥
पड़े नशेबाज़ियों में जो थे, ख़बर न जिनको थी घर की मुतलक़।
वे होश में कुछ हैं आते जाते, ठिकाने जल्दी मिज़ाज होगा॥
विना किए ये स्वतंत्र भारत, न चैन पल भर भी लेने देंगे।
अभी खुजाते हैं दाद को वह, यही फिर आख़िर को खाज होगा॥
नहीं ठहर सकते रागिए ये, बजाया मोहन ने राग आला।
समाज सारा इधर ही होगा, मिला हुआ सुर में साज होगा॥
जिसे समझते थे मर्ज़ मोहलिक, वही अब आया समझ में आसाँ।
मसीहा गांधी नज़र है आया कि जिसके ज़रिए इलाज होगा॥
गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा पड़ा हुआ था स्वदेश भारत।
प्रबल समय के प्रताप से अब, छुटेगा जल्दी सुराज होगा॥
बढ़ेगा धन-धान्य, मान-विद्या, अकाल से फिर सुकाल होगा।
विनोद-आनंद होंगे घर-घर "सदा" जो सस्ता अनाज होगा॥

२. ग़ज़ल

[श्रीत्रिभुवननाथ "आज़ाद" सैनिक]

सितमगर की हस्ती मिटानी पड़ेगी।
हमें अपनी करके दिखानी पड़ेगी॥
कभी उफ़् न लाएँगे अपनी ज़ुबाँ पर।
मुसीबत सभी कुछ उठानी पड़ेगी॥
बहुत हो चुका, अब सहें हम कहाँ तक।
ये बेईमानी सारी हटानी पड़ेगी॥
बिदेसी बसन औ नशे की जिनिस पर।
हमें अब पिकेटिंग करानी पड़ेगी॥
नमक को बनाकर औ कर बंद करके।
आज़ादी की झंडी उड़ानी पड़ेगी॥
करेंगे हम आज़ाद भारत को अपने।
विदेशी हुकूमत मिटानी पड़ेगी॥

३. तराना वतन

[श्रीडाक्टर लक्ष्मीसहाय सक्सेना बी० ए०]

थे हम भी कभी आँबाज़ वतन, ऐ चर्ख़ ! हमें बरबाद न कर।
ज़िंदा हैं मगर यह ज़ीस्त नहीं, अब और सितम ईजाद न कर॥
ज़र और जवाहर सारा लुटा, सब शान गई, नादार बने।
फ़ैशन पै लुटाते मुल्क का ज़र, नाशाद को क्यों तू शाद न कर॥
जब गाँधीजी ने ज़ोर दिया, जेलों के उधर दरवाज़े खुले।
हम आहो बुका से काम जो लें, देते हैं डपट फ़रयाद न कर॥
गोलमेज़ का तोफ़ा दिया जो हमें, नादान खुशी से उछलने लगे।
क्या जाल बिछाया हिकमत का, बातों में फ़क़त आज़ाद न कर॥
कांग्रेस ने जो देखा रंग बुरा, दिया डंका बजा आज़ादी का।
ऐ कृष्णमुरारी, कर तू मदद, मज़लूम को अब बेदाद न कर॥

४. तिरंगा झंडा

[श्रीशीतलाप्रसाद दीक्षित "रसरंग"]

जीवन की ज्योति जगाया है, इस तरल तिरंगे झंडे ने।
होना बलिदान सिखाया है, इस तरल तिरंगे झंडे ने॥
वीरों का हर्ष बढ़ाया है, उत्साह हृदय में छाया है।
हृत्तंत्री को झनकाया है, इस तरल तिरंगे झंडे ने॥
नूतन आनंद दिखाया है, स्वर्गोपम देश बनाया है।
स्वातंत्र्य मार्ग दिखलाया है, इस तरल तिरंगे झंडे ने॥
मद-मत्सर दूर भगाया है, चित शांत लहर लहराया है।
अरिदल का दिल दहलाया है, इस तरल तिरंगे झंडे ने॥
यदि इसकी शान न जावेगी, "रस-रंग" संपदा आवेगी।
कर्तव्य अपूर्व सिखाया है, इस तरल तिरंगे झंडे ने॥

५. वीर बालिकाएँ

[श्रीरामरत्नसिंह वर्मा "रत्न"]

हम देख चुकी हैं सब कुछ पर, अब करके कुछ दिखला देंगी।
निज धर्म-कर्म पर दृढ़ होकर, कुछ दुनिया को सिखला देंगी।
है क्या कर्त्तव्य हमारा अब, पहचान लिया हमने उसको।
अरमान यही अब दिल में है, लंदन का तख़्त हिला देंगी।
समझो न हमें कन्याएँ हैं, हम दुष्ट-नाशिनी दुर्गा हैं।
कर सिंहनाद आज़ादी का, दुष्टों का दिल दहला देंगी।
राष्ट्रीय ध्वजा लेकर कर में, गावेंगी राष्ट्र-गीत प्यारे।
दौड़ा कर बिजली भारत में, मुर्दे भी तुरत जिला देंगी।
बेड़ियाँ ग़ुलामी काटेंगी, आज़ाद करेंगी भारत को।
उजड़े उपवन में भारत के, अब प्रेम-प्रसून खिला देंगी।
कंपित होगी धरती ही क्यों, हाँ आसमान हिल जावेगा।
"कविरत्न" वज्र की भाँति तड़प, रिपुदल का दिल दहला देंगी।

६. आज़ादी या मौत (ग़ज़ल)

[श्रीहरद्वारप्रसाद बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

अब तो आज़ादी विना जीना हमें दुशवार है।
इसलिये ही मुल्क मर मिटने को अब तैयार है॥
आबरू इज़्ज़त गँवाकर हो गए कसे ज़लील।
हा! हमारी ज़िंदगी संसार में भू-भार है॥
इंतज़ारी हो चुकी, अब सब्र भी जाता रहा।
उनकी बातों पर हमें कुछ भी नहीं इतबार है॥
ज़िंदगी वह ख़ाक है जिसमें न आज़ादी रहे।
इस गु़लामी ज़िंदगी को बार सौ धिक्कार है॥
है तमन्ना दिल की यह, आज़ाद ही होकर रहें।
सब दिलों की धुन यही, यह सब दिलों का तार है॥
मुल्क हो आज़ाद, तकलीफ़ें उठाएँगे सभी।
जेल जाने से ज़रा हमको नहीं इनकार है॥
गोलियाँ हम पर चलें, शूली मिले, फाँसी चढ़ें।
गन मशीनों से भी अब, मरना हमें स्वीकार है॥
नरक भी जाना पड़े, तो हम खुशी से जायँगे।
हिंद के उद्धार को वह स्वर्ग ही का द्वार है॥

७. अहिंसात्मक संग्राम (ग़ज़ल)

[श्रीहरद्वारप्रसाद बी० ए०, एल्-एल् बी०]

किसे हुब्बे वतन कहते, किसे बलिदान कहते हैं?
अजी, हँसते हुए मरकर, जगत् को हम दिखा देंगे।
"नहीं अन्याय का सहना" अगर अपराध कहते हो।
तो हम अपराधियों में नाम अपना भी लिखा देंगे॥
उन्हें है नाज़ ऐरोप्लेन, सेना, गन मशीनों पर।
अहिंसा-शस्त्र का हम भी, मज़ा उनको चखा देंगे॥
पड़ा है सामना। पाशविक से आत्मिक बल का

उन्हें हम बुद्ध-ईसा का कथन सच्चा दिखा देंगे ॥
जंग यह बेमिसल होगी, तमाशा देखेगी दुनिया।
खड़े रह जायँगे, हथियार सब उनके रखा देंगे ॥
उधर साइंस का बल है, इधर यह नव परीक्षा है।
अतुल बल शक्ति सत्याग्रह, अमल करके दिखा देंगे ॥

८. ग़ज़ल

[श्रीहरद्वारप्रसाद बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

जब तक स्वराज हिंद में लाया न जायगा।
शैतानी हुकूमत को मिटाया न जायगा ॥
हर रोज़ हो रही है तबाही जो हिंद में।
मिट जायँगे, गर इसको घटाया न जायगा ॥
पैदा करे जो अन्न, वही भूख से मरे।
यह ज़ुल्म-सितम अब तो उठाया न जायगा ॥
मिहनत करे कोई, कोई लूटे, करे मज़े।
धन अपना इस तरह से लुटाया न जायगा ॥
क़ानून इस तरह कि तरक्क़ी न हम करें।
अंधेर इस तरह से मचाया न जायगा ॥
कैसे ज़लील हो रहे, हम ग़ैर मुल्क में।
पशुओं की तरह ठोकरें खाया न जायगा ॥
हम बावफ़ा हैं कैसे, दिखाया है, बार-बार।
अब पेट के बल हमको चलाया न जायगा ॥
वादे बहुत किए, न किया एक भी पूरा।
वादों पै एतबार अब, लाया न जायगा ॥
ज़ख़्मी जिगर को चैन हो सकता नहीं तब तक।
शैतानी हुकूमत को मिटाया न जायगा ॥
ख़ुशहाल न होगा, न तरक़्की करेगा मुल्क।
जब तक स्वराज हिंद में लाया न जायगा ॥

९. प्यारा जवाहर

[श्रीश्यामलाल वर्मा "कुसुमबंधु"]

भारत-युवक-हृदय का अरमान है जवाहर।
निज राष्ट्र-बाँसुरी की मृदु-तान है जवाहर॥
उठती है इसके रग में जातीयता की लहरें।
शुचि सादगी के घर का सामान है जवाहर॥
कृषकों का है कलेजा, श्रम-जीवियों का भेजा।
अंत्यज अनाथगण का, प्रिय प्रान है जवाहर॥
असमानता पिशाचिन के सिर के काटने को।
उत्साह एकता का किरपान है जवाहर॥
सच्चा है शुद्ध सेवक भारत-वसुंधरा का।
अद्भुत बली अली है, हनुमान है जवाहर॥
वैरी विरोधियों के चकमों में है न आता।
इतिहास का है पंडित, गुण-खान है जवाहर॥
माता का लाड़ला है, प्यारा है ये पिता का।
गाँधी महात्मा का, फ़रमान है जवाहर॥
ऐ आँखवालो, आओ, देखो, इसे परेखो।
देवी स्वतंत्रता की संतान है जवाहर॥
मृतकों में फूँकता है यह रूह आबरू की।
"कवि श्याम" क्रांति-दल का कप्तान है जवाहर॥

१०. वीर-आह्वान् (ग़ज़ल)

[श्रीसोमदेव शर्मा "सोम"]

पहन लो केसरी बाना, हुआ फ़र्मान है जारी। टेक
सजो अब युद्ध जाने को, पुकारी जा रही बारी॥
सुनो तुम ऐ महावीरो! करो कुछ याद बल अपना।
त्यागकर भाव कायर के, बनो तुम वीर व्रतधारी॥ पहन०
तजो आलस्य ऐ शूरो! ज़रा भुज-दंड फड़काओ।

काटि दासत्व की बेड़ी, करो आज़ाद मा प्यारी ॥ पहन०
विनय-युत पत्र पर भी जब, नहीं कुछ ध्यान वे लाए।
किया तब नमक-सत्याग्रह, मचा संग्राम है भारी ॥ पहन०
गए प्यारे जवाहर जेल में, फिर श्रीमहात्माजी।
अहिंसा-सत्य का अब तुम, करो संग्राम भयकारी ॥ पहन०
हिला दो तख़्त लंदन का, कँपा दो लार्ड इरविन को।
चकित हो आत्मबल का खेल, देखे मेदिनी सारी ॥ पहन०
'शिवा' के वीर वंशज हो, धीर "परताप" के सम हो।
विजय पाओगे तुम निश्चय, बनो गांधी के अनुहारी ॥ पहन०
चलो इकसाथ ऐ वीरो! पताका हाथ में लेकर।
"सोम" सब प्राण-आहुति दो, पूर्ण हो यज्ञ तब भारी ॥ पहन०

११. चाहिए

[श्रीदिनेशप्रसाद बाथम]

क्रांति के मैदान में ख़ुश होके आना चाहिए।
सत्य-आग्रह के लिये तन-मन लगाना चाहिए ॥
देश-सेवा में लगाना प्राण की बाज़ी पड़े।
तो ख़ुशी से हम सबों को सिर कटाना चाहिए ॥
देश-सेवक सह रहे हैं, कष्ट भारी आजकल।
साथ दे उन सज्जनों का, दुख बटाना चाहिए ॥
दुख सहे बिन भाइयों का दुःख कैसे दूर हो।
स्वार्थ-साधन से सबों को दिल हटाना चाहिए ॥
तोड़ दो ज़ंजीर अब तो दासता की मित्रवर।
पाठ आज़ादी का अब सबको पढ़ाना चाहिए ॥
किंतु हिंसा का समय हरगिज़ नहीं है भाइयो।
नम्रता-युत सत्य-आग्रह को निभाना चाहिए ॥
अब हटाओ अपने मन से वैर-भावों को "दिनेश"।
संगठन कर प्रेम से सबको मिलाना चाहिए ॥

१२. गज़ल दादरा

[श्रीदुर्गाप्रसाद जायसवाल]

टेक—गाँधी बाबा ने हलचल मचाय दिया है,
अब आज़ादी का डंका बजाय दिया है।
शेर—हिंद आज़ाद करेंगे, उन्होंने ठाना है।
सत्य-आग्रह व अहिंसा को अस्त्र माना है।
किया प्रयोग आफ्रि.का में इसे जाना है।
इसी से अब उन्हें सरकार को झुकाना है।
ऐसी स्वतंत्र घोषणा अब तो,
खुल्लम खुल्ला सुनाय दिया है॥ गाँधी० १
शेर—पूर्ण स्वराज्य को लिए बिना न छोड़ेंगे।
भीख माँगेंगे नहीं, औ न हाथ जोड़ेंगे।
छेड़कर शांत समर मुँह कभी न मोड़ेंगे।
बेड़ी परतंत्रता की अपने हाथ तोड़ेंगे।
कष्ट सहनकर स्वार्थ त्यागकर,
अपने चलन से दिखाय दिया है॥ गाँधी० २
शेर—सत्य विजयी रहा, इतिहास यह बताता है।
झूठ की हार हुई, देखने में आता है।
रोज़ ठेठर व सिनेमा यही दिखाता है।
राम-रावण का समर भी यही सिखाता है।
बिना अस्त्र के सत्याग्रह से,
शासन की जड़ को हिलाय दिया है॥ गाँधी० ३
शेर—ज़ुल्म सहते हैं वे, ज़ालिम की भलाई करते।
सुपथ सुझाते हैं, उसकी न बुराई करते।
प्रेम औ सत्य के बल को उसे दिखाते हैं।
बुद्ध औ ईसा की शिक्षा अमल में लाते हैं।
पशु-बल, कूट-नीति, अतुलित बल,
सब ही का छक्का छुड़ाय दिया है॥ गाँधी० ४

१३. ग़ज़ल दादरा

[श्रीरामदास जायसवाल बी० एस्-सी०]

टेक—होवे भारत स्वतंत्र करेंगे यतन।

शेर—जेल जाने से ज़रा भी नहीं इनकार हमें।
कष्ट, संकट व विपत है सभी स्वीकार हमें।
डंडे, गोली व गन मशीन की भी मार हमें।
इनसे भी बढ़के तेरी मार अंगीकार हमें।
हम तो 'भारत स्वतंत्र' करेंगे रटन॥ होवे० १॥

शेर—स्वर्ग में, नर्क में, जहाँ कहीं भी जाएँगे।
गीत 'भारत स्वतंत्र' के सदा सुनाएँगे।
बुद्ध-ईसा की सीख विश्व को सिखाएँगे।
हम तो मारेंगे नहीं, मार भले खाएँगे।
होगी भाषा स्वदेशी, स्वदेशी बसन॥ होवे० २॥

शेर—शुद्ध खादी का सदा हर्ष से प्रयोग करें।
स्वदेशी वस्तुओं का ही सदा उपयोग करें।
विश्वव्यापी हो स्वदेशी, यही उद्योग करें।
भाव भर दें कि स्वदेशी से नहीं लोग डरें।
करें भारत स्वतंत्र स्वदेशी जपन॥ होवे० ३॥

शेर—हमको वे छेड़ें, सताएँगे औ रुलाएँगे।
हम न कुछ बोलेंगे औ क्रोध भी न लाएँगे।
कष्ट सह-सहके उनमें दर्द दिल उगाएँगे।
हार जाएँगे वे फिर ज़ुल्म भी हटाएँगे।
ऐसा उनको दिखाएँगे कष्ट-सहन॥ होवे० ४॥

शेर—कौन कहता है कि सत्याग्रह में बल है नहीं।
इससे बढ़कर तो कहीं जगमें कोई कल है नहीं।
बात सच है कि कपट और इसमें छल है नहीं।
कौन ऐसी है समस्या, जो इससे हल है नहीं।
यह तो चक्र-सुदर्शन है दुष्ट-दलन॥ होवे० ५॥

१४. युवकों की प्रतिज्ञा (ग़ज़ल)

[श्रीसरजूप्रसादसिंह "भीम"]

भारत ! मैं तेरे नाम का डंका बजाऊँगा।
संसार का शिरमौर तुझे फिर बनाऊँगा॥
रहने न दूँगा माँ की गुलामी की बेड़ियाँ।
आज़ाद बनाऊँगा, तभी चैन पाऊँगा॥
ज़ालिम पुलिस गर हम पै चलाएगी लाठियाँ।
तो शौक़ से मैं सामने सीना अड़ाऊँगा॥
हिंसा को स्वप्न में भी न लाऊँगा हृदय में।
ख़ंजरसे सितमगर के मैं बोटा कटाऊँगा॥
बौछार गोलियों की या तेग़ों की मार हो।
माताके लिये शीश मैं अपना चढ़ाऊँगा॥
घर-घर में चला चर्ख़ा, बना करके सूत को।
लाखों-करोड़ों थान मैं खादी बनाऊँगा॥
कपड़े विदेशी मुल्क में बिकने न दूँगा मैं।
खादी से देश-भाइयों के तन सजाऊँगा॥
मैंचेस्टर-लंकेशायर ने लूटा है देश को।
अब ताले चढ़ा उनकी मिलों को रुलाऊँगा॥
गाँजे, शराब ताड़ियों की जा दुकानों पर।
कर जोड़ भाइयों से नशा को छुड़ाऊँगा॥
जिन ज़ालिमों ने देश को बरबाद किया है।
उनके क्रिए का फल बुरा, उनको चखाऊँगा॥
अब तक जो लुटा मालोज़र वह कम है कुछ नहीं।
लुटने न दूँगा, देश की दौलत बचाऊँगा॥
ऐ "भीम" न कर सोच, ये मोहन ने कहा है--
"स्वाधीन मातृभूमि मैं अपनी बनाऊँगा॥"

१५. स्वदेश-प्रेम (चेतावनी)

[श्रीउदयनारायणसिंह वर्मा "नारायण"]

उठो भलाई करो वतन की, तुम्हें जवाहर जगा रहा है।
निसार कर दो स्वदेश पर जाँ, ये पाठ प्यारा पढ़ा रहा है॥
जगीं जहाँ की हैं क़ौमें सारी, तुम्हें कहाँ से है नींद आई।
ख़बर नहीं क्या ज़रा भी तुमको, कि ज़ुल्म ज़ालिम मचा रहा है॥
उठो, न आलस्य अब करो यों, बढ़ा दो जल्दी क़दम अगाड़ी।
बना दो आज़ाद देश को तुम, जो दुःख मुद्दत से पा रहा है॥
उठा अहिंसा-कटार कर में, उड़ा दो ज़ंजीर दासता की।
दिखा दो ज़ालिम को अपना जौहर, जो बेकसों को सता रहा है॥
तुम्हारे ही ज़र को लूट करके, हुआ जो ख़ुशहाल शक्तिशाली।
वही "नरायण" तुम्हारा देखा, बुरी तरह ख़ूँ बहा रहा है॥

१६. "स्वतंत्र होकर"

[श्रीदिनेशप्रसाद बाथम]

गुलाम रहकर बुरा है जीना, है मरना अच्छा स्वतंत्र होकर।
सुधा को तजकर गरल का प्याला, है भरना अच्छा स्वतंत्र होकर॥
पड़ी हो हाथों में हथकड़ी गर, तो स्वर्ग का सुख न चाहिए फिर।
नरक में, दुख में, निवास निशदिन, है करना अच्छा स्वतंत्र होकर॥
गुलाम रहकर मिले जो घर में, सुस्वादु भोजन तो तुच्छ है वह।
उपास करके अकेले वन में, विचरना अच्छा स्वतंत्र होकर॥
जो दासता में मिले उपाधी, या मान-पदवी, तो छोड़ दीजे।
घृणा व अपमान के गढ़े में, उतरना अच्छा स्वतंत्र होकर॥
गुलाम रहकर विदेशी मलमल, अगर पहनने को मिल रही हो।
तो लाख दर्जे है उससे खद्दर, पहरना अच्छा स्वतंत्र होकर॥
स्वतंत्रता के लिये मरेंगे, स्वतंत्रता ध्येय है हमारा।
"दिनेश" फाँसी पै सिर ख़ुशी से, है धरना अच्छा स्वतंत्र होकर॥

१७. हसरते दिल

[श्रीयुत "बिसमिल"]

देखना है किस क़दर दम ख़ंजरे क़ातिल में है।
अब भी यह अरमान, यह हसरत, दिले बिस्मिल में है॥
ग़ैर के आगे न पूछो, इसमें है इक ख़ास राज़।
फिर बता देंगे तुम्हें, जो कुछ हमारे दिल में है॥
खींचकर लाई है सबको, क़त्ल होने की उमीद।
आशिक़ों का आज जमघट, कूचए क़ातिल में है॥
फिरते हो क्यों हाथ में, चारों तरफ़ ख़ंजर लिए।
आज है यह क्या इरादा, आज यह क्या दिल में है॥
एक से करता नहीं क्यों, दूसरा कुछ बातचीत।
देखता हूँ मैं जिसे वह, चुप तेरी महफ़िल में है॥
उस पर आफ़त आयगी, इक रोज़ मर ही जायगा।
वह तो दुनिया में नहीं, जो कूचए-क़ातिल में है॥
एक जानिब है मसीहा, एक जानिब है क़ज़ा।
किस कशाकश में पड़ी है, जान किस मुशकिल में है॥
ज़ख़्म खाकर भी उसे है, ज़ख़्म खाने की हवस।
हौसला कितना तड़पने का तेरे बिस्मिल में है॥

१८. बहरे तवील

[श्रीबद्रीप्रसाद सिंह "योगी"]

हिंदू-भ्राताओ! तुमसे विनय नम्र यह
ध्यान मेरी विनय पर भी लाना ज़रा।
भाई मुसलिम तुम्हारे पड़े हैं अलग
उन्हें जल्दी गले से लगाना ज़रा॥
छोड़ ईर्षा, कपट, द्वेष औ छूत को
प्रीति-अंकुर हिए में जमाना ज़रा॥
मादरे हिंद है आपकी डूबती

दे सहारा इसे अब उठाना ज़रा ॥ १ ॥
आके उन्नति के मारग में ऐ भाइयो !
पीछे हरगिज़ हटाना क़दम ही नहीं ।
करो सेवा वतन की दिलोजान से
जान जाने का कीजेगा ग़म ही नहीं ॥
जान प्यारी नहीं, प्यारा हिंदोस्ताँ
इसमें करना ज़रा भी वहम ही नहीं ।
या तो आज़ाद होवेगी माँ मेरी अब
वरना रक्खूँगा इस तन में दम ही नहीं ॥२॥
क्यों मुझे तुम दिखाते हो डर जेल का
जेलख़ाने की मुझको फ़िकर ही नहीं ।
ख़िदमते-क़ौम में जाँ निछावर करूँ
इसमें समझो तनिक भी कसर ही नहीं ॥
लेके वारंट आओ मेरे पास तुम
तो मैं खाऊँगा ख़ौफ़ो-ख़तर ही नहीं ।
लेके ख़ंजर करो दम को मेरे ख़तम
मैं करूँगा ज़रा भी उज़र ही नहीं ॥३॥
छोड़कर शौक़ फ़ैशन का ऐ दोस्तो !
तौक़ गर्दन में हो अपनी जल्दी पहन ।
बेड़ी पैरों में, हाथों में हो हथकड़ी
"वंदेमातरम्" का हो मुँह में प्यारा भजन ॥
हे प्रभो ! जल्द दे ऐसी ताक़त मुझे
ताकि आज़ाद कर दूँ यह भारत-चमन ।
बुलबुलों को रिहा झट कफ़स से करूँ
उड़ें गुलशन में मन करके अपना मगन ॥४॥
छोड़ो-छोड़ो विदेशी सभी वस्तुएँ
दूर दिल से करो अपने सारे भरम ।

कात चर्ख़ा करो सूत तैयार सब
बनै खद्दर तभी तो रहेगी शरम॥
होवे खद्दर का पहरन बिछावन सभी
होवे खद्दर ही अपना धरम और करम।
जागते सोते उठते हो हालत कोई
बस लगन देशी में ही रहे दम बदम॥ ५॥
अपना बाना ज़नाना करो दूर अब
चूड़ियाँ शर्म की फोड़ होओ निडर।
है समर सत्याग्रह का ठना देश में
रक्खो आगे क़दम होके सीनासिपर।
मौक़ा ऐसा मिलेगा नहीं हाथ फिर
नाम "योगी" रहेगा हमेशा अमर।
बोलो "जय जय महाराज गाँधी की" सब
हिंद-माता के हैं जो कि लायक़ पिसर॥ ६॥

१९. स्वराज्य-गायन (थिएटर)

[श्रीडाक्टर लक्ष्मीसहाय सकसेना बी० ए०]

सब मिलके गाओ स्वराज्य या खुदाया।
फ़ैशन का नाश हो, खद्दर लिबास हो,
खटका न यास हो, स्वराज्य या खुदाया। सब०
न हिंदू हैं, न मुसलमाँ, न ईसाई, न यहूद।
वतन-परस्त हैं हम, वतन हमारा माबूद।
वतन की शान बढ़े औ वतन का ध्यान रहे।
हमेशा मुल्क हमारा रहे खुशी बहबूद।
भारत के सर पर तू ताज दे, खुदाया।
जो कल तू देता हो, आज दे, खुदाया॥
सब मिलके गाओ स्वराज्य या खुदाया।

इति, वंदे मातरम्

Series No. 15. راشٹریہ ٹنگا اور سودیشی کھادی

ن پنڈتا سروپ کماری نیہرو
یہ-سعادتگنج روڈ-لکھنئو

"मोहिनी-विद्या" कोई छूमंतर या जादू नहीं, यह जर्मनी का एक अद्भुत आविष्कार है, जिसे "हिप्नटिज़्म" कहते हैं। इस पर केवल छः मास के पूर्ण अभ्यास द्वारा स्त्री-पुरुषों को मोहित करके अपनी इच्छा का दास बना लीजिए

प्रकाशक—सरस्वती-साहित्य-मंदिर

सादी १।)] सआदतगंज रोड, लखनऊ. [सजिल्द १॥)